महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

१२/०९/२०२६

मूलस्वरूप स्थिति का अभ्यास

सभी आत्माएं, अपने मूल स्वरूप में बैठे... अपने मूल स्वरूप का अनुभव करें... सभी देखें, अपने मूल स्वरूप को, अपने सत्य स्वरूप को... मैं आत्मा, सितारा, ब्रेन के अंदर, हाइपोथलमस और पिचुटरी के मेरे सिंहासन पर स्थित हूँ... एक चमकता सितारा... अनुभव करे अपने सत्य स्वरूप को... यह सितारा मैं आत्मा हूँ जो सभी मेरे सूक्ष्म और स्थूल कर्मेंद्रियों को चलाता हूँ... हर कोई अपने मूल स्वरूप को अनुभव करे... क्या अनुभव हो रहा है.. इस अनुभव को अनुभव करें..... यह अनुभव मेरे मूल स्वरूप का अनुभव है इस अनुभव को नोट करें... अंदर उतरे.. देखें सितारे से क्या क्या अनुभूति हो रही है... यही मेरा सत्य स्वरूप है...